

कुंभमेला: प्राचीनता तथा विश्व का सबसे बड़ा जनसमागम

आस्तिक एवं संगीता शुक्ला

<https://doi.org/10.61410/had.v21i3.329>

सार

कुंभ मेला सनातन संस्कृति का सबसे बड़ा एवं पवित्र तीर्थ मेला है, जहाँ विभिन्न जाति, धर्म एवं लिंग के लोग एकत्र होकर आध्यात्मिक उन्नति करते हैं। यह चार स्थानों पर प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में ग्रहों की स्थिति के आधार पर आयोजित होता है, जिसमें प्रयागराज का त्रिवेणी संगम सबसे प्रमुख है। पौराणिक कथा के अनुसार, समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत की बूंदें इन चार स्थानों पर गिरीं, जिससे कुंभ की परंपरा जुड़ी है। प्राचीन प्रमाण हवेनसांग (7वीं शताब्दी), तुलसीदास की रामचरितमानस, आदि शंकराचार्य के अखाड़ों और अबुल फजल के उल्लेखों में मिलते हैं। यूनेस्को ने 2017 में इसे मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत घोषित किया है। कुंभ मुख्य रूप से सामान्य, अर्ध, पूर्ण और महाकुंभ के रूप में होता है। महाकुंभ 144 वर्ष बाद प्रयागराज में आयोजित होता है। महाकुंभ 2025 प्रयागराज में विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन बना, जिसमें अनुमानित 45 करोड़ की बजाय समापन तक 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालु पहुंचे। शाही स्नान मुख्य अनुष्ठान है विभिन्न तिथियों पर करोड़ों ने स्नान किया, जैसे मौनी अमावस्या पर 5 करोड़। प्रबंधन में अस्थायी जिला, AI-ड्रोन सुरक्षा, साइबर पुलिस, स्वास्थ्य सेवाएँ, स्वच्छता और बहुभाषी साइन बोर्ड जैसी व्यवस्थाएँ की गईं। विशाल भीड़ के कारण भीड़ प्रबंधन, सुरक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य और पर्यावरणीय चुनौतियाँ प्रमुख रहीं, जिन्हें कुशलतापूर्वक संभाला गया। 1954 की भगदड़ जैसी दुर्घटनाओं से सबक लेकर आधुनिक तकनीक से आयोजन सफल रहा। यह आयोजन आस्था, एकता, भक्ति और वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को दर्शाता है। विदेशी पर्यटक भी शामिल हुए और विभिन्न प्रदर्शनियों से भारतीय संस्कृति का प्रदर्शन हुआ। कुंभ पाप से पुण्य, सांसारिकता से आध्यात्मिकता की यात्रा है, जो गंगा स्नान से पूर्ण होती है। महाकुंभ 2025 भारत की संगठन क्षमता और सनातन संस्कृति की महानता का जीवंत प्रमाण बना।

परिचय:

कुंभमेला सनातन संस्कृति का सबसे बड़ा एवं पवित्र तीर्थ मेला है। जहाँ करोड़ों श्रद्धालु एक साथ शान्तिपूर्ण तरीके से एकत्रित होकर अपनी आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करते हैं। कुंभ शब्द का शाब्दिक अर्थ घड़ा या बर्तन होता है तथा मेले का शाब्दिक अर्थ मिलन, एकत्रित होना या समागम होता है अर्थात् कुंभ एक ऐसा घड़ा या बर्तन है जिसमें 'विभिन्न जाति, धर्म एवं लिंग के लोग एक साथ एकत्रित होकर आत्मिकमंथन के द्वारा शांति, शुद्धता, भक्तिरूपी अमृत की प्राप्ति करते हैं। जहाँ कुंभ मेला अपने आंचल में करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था, भक्ति, एकता और विचारों को समेटकर टिमटिमाते तारों के विशाल समूह से सुसज्जित आकाश की भाँति विशालता ग्रहण किये हुये हैं, वहीं उसके आंचल में भेदभाव, छुआछूत, अस्पृश्यता के लिये कोई स्थान नहीं है। गुप्तोत्तर काल में जहाँ एक

बीजशब्द—कुंभमेला, जनसमागम प्रबंधन, प्रयागराज, भीड़ नियंत्रण, जनस्वास्थ्य।

- शोधार्थी— प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, उत्तर प्रदेश
- शोध निर्देशिका – आचार्य प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्त्व, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

ओर समाज जाति-व्यवस्था के माध्यम से कई टुकड़ों में विभक्त हो रहा था वहीं दूसरी ओर प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग संगम में आयोजित महान धार्मिक उत्सव का वर्णन करता है अर्थात् प्रारंभ से ही आर्य संस्कृति के सामाजिक जीवन में आयी विभाजनकारी गुणों के विपरीत कुंभ ने हर वर्ग के लोगों को एक साथ एक सूत्र में बांधने का कार्य किया है। सूर्य, चंद्रमा एवं बृहस्पति की स्थिति के ज्योतिषीय गणना के आधार पर भारतवर्ष में कुंभ का आयोजन चार स्थानों पर किया जाता है। गंगा नदी के तट पर हरिद्वार, गंगा, यमुना एवं सरस्वती के संगम स्थल प्रयागराज, क्षिप्रा नदी के तट पर उज्जैन एवं गोदावरी नदी के तट पर नासिक में। इन सभी स्थलों में से प्रयागराज में संगम के तट पर आयोजित कुंभ वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व का सबसे बड़ा सामूहिक धार्मिक आयोजन बन गया है। महाकुंभ 2025 (प्रयागराज, उ० प्र०) में जहाँ 45 करोड़ तीर्थयात्रियों के आने की संभावना थी, वहीं महाकुंभ के समापन के दिन तक यह संख्या 60 करोड़ की जनसंख्या भी पार कर गयी। प्राचीन काल से ही प्रयागराज के संगम पर इस प्रकार के धार्मिक उत्सवों के होने का वर्णन प्रयागराज के महान एवं पवित्र तीर्थ होने की घोषणा करता है। तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरितमानस में प्रयागराज की विशिष्टता का उल्लेख कुछ इस प्रकार है—

को कहि सकई प्रयाग प्रभाऊ । कलुप पुंज कुंजर मृगराऊ ।

अस तीरथपति देखि सुहावा । सुख सागर रघुबर सुख दावा ॥

अर्थात् पापों के समूहरूपी हाथी को मारने के लिये सिंहरूपी प्रयागराज का प्रभाव कौन कह सकता है। ऐसे सुहावने तीर्थराज का दर्शन कर सुख के समुद्र रघुकुल श्रेष्ठ श्री राम ने भी सुख पाया।

गंगा के उद्गम के साथ ही विभिन्न नदियाँ उसके साथ जगह-जगह पर संगम का निर्माण करती हैं। परंतु प्रयागराज में गंगा, यमुना एवं सरस्वती के त्रिवेणी संगम ने इस स्थान को मोक्षदायक बना दिया है। इसीलिये कहा जाता है कि—

“प्रयागस्य पवैशाद्वै पापं नश्यतिः तत्क्षणात् ” अर्थात् प्रयागराज में प्रवेश करते ही व्यक्ति के सभी पाप तत्काल नष्ट हो जाते हैं। वहीं गंगा के लिये कहा जाता है कि, **“गंगे तव दर्शनार्थं मुक्ति”** अर्थात् गंगा के दर्शन मात्र से ही मुक्ति प्राप्त होती है। इस प्रकार प्रयाग में गंगा के प्रवेश होते ही गंगा की मुक्ति एवं गंगा के दर्शन मात्र से प्रयागराज की मुक्ति ही इस स्थान को सनातन संस्कृति के विशाल समागम का केंद्र बिंदु बनाती है।

माघे मेषगते जीवे, मकरेचंद्री भास्करी ।

अमावस्या तदा योगः कुम्भख्यस्तीर्थं नायके ॥

अर्थात् “माघ में बृहस्पति के मेष में होने तथा सूर्य और चंद्रमा के मकर में होने पर अमावस्या को प्रयाग में कुंभ मेले का आयोजन होता है”। कुंभ मेले में मुख्य रूप से शाही स्नान, गंगा आरती, दीपदान, कल्पवास, प्रयागराज पंचकोशी परिक्रमा जैसे आदि धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता है। कुंभ मेले का सबसे महत्वपूर्ण एवं पवित्र धार्मिक अनुष्ठान शाही स्नान ही होता है। जिसमें विशाल जन-समूह में श्रद्धालु संगम में डुबकी लगाकर अपने मन को गंगा की तरह पवित्रता एवं अपने विचारों को गंगा का सतत प्रवाह प्रदान करते हैं। कुंभ मेले के आयोजन में कुल 6 शाही स्नान होते हैं।

महाकुंभ 2025 में विभिन्न शाही स्नानों में स्नान करने वाले श्रद्धालुओं की अनुमानित संख्या (PIB की Report के अनुसार) निम्नवत् है—

1- पौष पूर्णिमा	—	1.5 करोड़
2- मकर संक्रांति	—	3.5 करोड़
3. मौनी अमावस्या	—	5 करोड़
4. बसंत पंचमी	—	2.33 करोड़
5. माघी पूर्णिमा	—	2 करोड़
6. महा शिवरात्री	—	1.3 करोड़

एक स्थान पर इतने विशाल जनसमूह के समागम से कुंभ मेला जहां सनातन संस्कृति का वर्तमान समय में फहराता विशालतम परचम बना हुआ है वहीं विशाल जनसमूह के एकत्रीकरण से अनेक प्रबंधन चुनौतियाँ भी सामने आती परिलक्षित होती हैं। फिर भी अनेक चुनौतियों का सामना करते हुये कुंभ अपनी पवित्रता, महानता एवं आध्यात्मिकता को समेटे हुये प्राचीन काल से अब तक सम्पन्न होता चला आ रहा है। कुंभ मुख्य रूप से पाप से पुण्य की, सांसारिकता से आध्यात्मिकता की तथा अहंकार से विनम्रता की यात्रा है जो ज्योतिषी गणना में ग्रहों की एक विशेष स्थिति, में अनवरत् प्रवाहित गंगा की धारा में पवित्र स्नान के साथ पूर्ण होती है।

कुंभ मेले का ऐतिहासिक एवं पौराणिक महत्व—

कुंभ मेले की प्राचीनता का अध्ययन करते समय इसकी शुरुआत पुराणों में वर्णित समुद्र मंथन की कथा से संबंधित मिलती है। समुद्र मंथन की कथा कुंभ मेले के उत्पत्तिकी सर्वमान्य कथाओं में से एक है। विष्णु पुराण के अनुसार एक बार दुर्वासा ऋषि वैकुण्ठ लोक से वापस आ रहे थे। मार्ग में इंद्र से उनकी भेंट हो गयी इंद्र को त्रिलोकाधिपति मानकर दुर्वासा ने भगवान से प्रसाद स्वरूप प्राप्त माला इंद्र को अर्पित कर दी। इंद्र ने माला का आदर न करते हुये उसे अपने हाथी ऐरावत के मस्तक पर डाल दिया। हाथी ने उसे अपनी सूँड से उठाकर पैरों से कुचल दिया। इससे दुर्वासा जी ने क्रोधित होकर इंद्र को तीनों लोकों सहित शीघ्र ही श्री हीन हो जाने का श्राप दे दिया। इस श्राप से घबराकर सभी देवता ब्रह्मा जी के पास पहुँच गये। ब्रह्मा जी सभी देवताओं को लेकर श्री हरि के पास गये। भगवान ने देवताओं को दैत्यों के साथ संधि करके समुद्र मंथन करने का आदेश दिया। देवताओं ने दैत्यों के साथ मिलकर समुद्र मंथन से 14 रत्नों की प्राप्ति की। इन्हीं में से एक रत्न आयुर्वेद के प्रवर्तक और यज्ञभोक्ता धन्वन्तरि अपने हाथों में अमृत कलश लेकर प्रकट हुए। अमृत को ग्रहण करने के लिये देवता और दैत्य आपस में लड़ गये जिसे देवासुर संग्राम के नाम से जाना जाता है। यह युद्ध 12 दिनों तक चला। इसी युद्ध के दौरान अमृत कलश से कुछ बूँदें भारतवर्ष की भूमि पर चार स्थानों पर जा गिरी उन्हीं चार स्थानों (हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन, नासिक) पर प्राचीन काल से ही कुंभ मेले का आयोजन किया जाता रहा है। इन्हीं स्थलों पर कुंभ के उत्सव के दौरान करोड़ों श्रद्धालु समुद्र मंथन की भाँति आत्ममंथन कर अमृतरूपी भोग को प्राप्त करते हैं।

वाल्मीकि रामायण में इन चारों स्थानों में से प्रयागराज के संगम महत्ता का वर्णन करते हुये भरद्वाज मुनिभगवान श्री राम से कहते हैं कि—

अवकाशोविविक्तोऽयं महानद्योः समागमे ।

पुण्यश्च रमणीयश्च वसतिह भवान सुखम् ॥

अर्थात् “गंगा एव यमुना, इन दोनों महानदियों के संगम के पास का यह स्थान बड़ा ही पवित्र और एकान्त है। यहाँ की प्राकृतिक छटा भी मनोरम है। अतः तुम यहीं सुखपूर्वक निवास करो। इसी प्रकार आदि कवि वाल्मीकि के चरण चिन्हों पर चलते हुये ही गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी प्रयाग क्षेत्र और संगम का वर्णन कुछ इस प्रकार किया है कि—

छेत्रु अगम गढ़ गाढ सुहावा । अपनेहुंनहिं प्रतिपच्छिन्छ पावा ।

सेन सकल तीरन बर बीरा । कलुष अनीक दलन रनधीरा ॥

संगमु सिंहासन सुठि सोहा । छत्रु अरवयबदु मुनि मनु मोहा ।

चंवर जमुन अरु गंग तरंगा । देखि होहिं दुःख दारिद्र भंगा ॥

अर्थात् “प्रयाग क्षेत्र दुर्गम, मजबूत और सुंदरगढ़ है जिसको स्वप्न में भी पाप रूपी शत्रु के नहीं पा सकते । सम्पूर्ण तीर्थ ही उसके श्रेष्ठ वीर सैनिक है, जो पाप की सेना को कुचल डालने वाले और बड़े रणधीर है। (गंगा, यमुना और सरस्वती) संगमही उसका अत्यन्त सुशोभित सिंहासन है। यमुना जी और गंगा की तरंगे उसके (श्याम और श्वेत) चोंवर हैं, जिनको देखकर ही दुःख और दरिद्रता नष्ट हो जाती है” । इसके साथ ही गोस्वामी तुलसीदास जी एक कदम आगे बढ़ते हुये प्रयागराज में कुंभ की महत्ता का वर्णन करते हुये कहते हैं कि

माघ मकरगत रबि जब होई । तीरथपतिहिं आव सब कोई ।

देव, दनुज किन्नर नर श्रेणी । सादर गज्जहिं सकल त्रिवेणी ॥

अर्थात् “माघ माह में जब सूर्य मकर राशि पर होता है तब सब लोग तीर्थराज प्रयाग को आते हैं । देवता, दैत्य, किन्नर और मनुष्यों के समूह सब आदरपूर्वक त्रिवेणी में स्नान करते हैं” । उपर्युक्त चौपाईयों में प्रयागराज में ग्रहों की निश्चित स्थिति के आधार पर कुंभ मेले के आयोजन का प्रसंग परिलक्षित होता है। साथ ही देवता, दैत्य, किन्नर, मनुष्यों की सम्मिलित भागीदारी पावन संगम पर छुआछूत, जातिपाति वर्णभेद को नकारती हुई प्रतीत होती है।

कुंभ शब्द का प्राचीनतम उल्लेख ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में मिलता है। जहां पर इसका अर्थ घड़ा या बर्तन से संबंधित है। कुंभ मेले का प्राचीनतम लिखित प्रमाण 7वीं सदी में हर्षवर्धन के काल में आये चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तांत में मिलता है। ह्वेनसांग के अनुसार, हर्षवर्धन पाँच-पाँच वर्ष के अन्तराल पर प्रयाग में महामोक्ष परिषद का आयोजन करता था। समारोह में क्रमशः बुद्ध, सूर्य एवं शिव की प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय दिन पूजा होती थी। हर्षवर्धन खुले हाथों से दान-पुण्य करता था। यहाँ पर यह बात विचारणीय है कि ह्वेनसांग भी कुंभ मेले का सीधे तौर पर कोई भी वर्णन नहीं करता है। वह इसे प्रयोग महामोक्ष परिषद् के नाम से उल्लिखित करता है। नवीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य

द्वारा दसनामी अखाड़ों का गठन करने, कुंभ, अर्द्ध कुंभ को विशिष्टता प्रदान करती है। मध्यकालीन भारत में अबुल फजल ने भी अपनी पुस्तक 'आइने अकबरी' में प्रयाग में आयोजित वार्षिक धार्मिक उत्सव का उल्लेख किया है। Colonel H-S- GARRETT आइने अकबरी के अंग्रेजी अनुवाद (Page no-169) में इलाहाबाद का उल्लेख करते हुये गंगा के तट पर एक माह तक चलने वाली पूजा अर्चना का उल्लेख मिलता है जो कुछ इस प्रकार है—

Allahabad anciently called Prayag was distinguished by his Imperial Majesty by the former name- A stone fort was completed and many handsome edifices erected- The Hindus regard it as the king of shrines- Near it, the Ganges , the Jamuna and the Saraswati meet, though the latter is not visible- Near the village of Kantat considerable captures of elephants are made- What is most strange is that when jupiter enters the constellation leo a small hill appears from out of the Ganges and remains there during the space of one month upon which the people offer divine worship-

अर्थात् "जब बृहस्पति सिंह राशि में प्रवेश करता है तो गंगा के बीच को एक छोटी पहाड़ी प्रकट होती है और एक महीने तक वहीं रहती है, जिस पर लोग पूजा— अर्चना करते हैं"।

इलाहाबाद गजेटियर (Volume XXIII, 1911, page no-69) में इलाहाबाद में माघ माह में संगम पर भव्य मेले के आयोजन का उल्लेख है। इसके अनुसार 1906 में सम्पन्न हुये कुंभमेले में अनुमानित 3 मिलियन लोग अमावस्या के दिन उपस्थित हुए थे। जबकि सामान्य वर्षों में यह संख्या 3 से 5 लाख के बीच में रहती है।

स्वतंत्र भारत का पहला कुंभ 1954 में प्रयागराज (तत्कालीन इलाहाबाद) में आयोजित किया गया था। तब से लेकर आज तक कुंभ मेला का आयोजन लगातार अत्यधिक भव्यता धारण करता जा रहा है।

इन सभी ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर यह माना जा सकता है कि कुंभ मेले का सीधे तौर पर उल्लेख न आते हुये भी प्रयाग क्षेत्र में संगम के तट पर प्राचीन काल से ही श्रद्धालु अपार जन समूह में सम्मिलित होकर धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन करते आये है। मध्यकालीन भारत से लेकर ब्रिटिश काल तक लगातार संगम के तट पर इन अनुष्ठानों का आयोजन निर्बाध रूप से होता जा रहा है। आधुनिक काल में सरकार एवं श्रद्धालुओं के आपसी सहयोग से कुंभ मेले का आयोजन विश्व के बृहत्तम धार्मिक समागम के रूप में प्रतिष्ठित हो गया है। यूनेस्को ने 2017 में कुंभ मेले को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में घोषित किया है। यूनेस्को ने कुंभ मेले को पवित्र घड़े का त्योहार (Festival of the sacred pitcher) कहा है।

विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन : महाकुंभ 2025

कुंभ मुख्य रूप से चार प्रकार रूपों में आयोजित किए जाते हैं—सामान्य कुंभ, अर्द्ध कुंभ, पूर्ण कुंभ एवं महाकुंभ। सामान्य कुंभ चार-चार वर्ष के अंतराल पर हरिद्वार, प्रयागराज, नासिक एवं उज्जैन में आयोजित होते हैं। अर्द्धकुंभ मुख्य रूप से प्रयागराज एवं हरिद्वार में 6-6 वर्ष के अंतराल में आयोजित होते हैं।

12 वर्ष के अंतराल पर प्रयागराज में पूर्ण कुंभ का आयोजन किया जाता है वहीं 144 वर्ष (12 पूर्ण कुंभों के आयोजन के बाद) में प्रयागराज में महाकुंभ का आयोजन होता है। महाकुंभ का इतने समय अंतराल के बाद आयोजन इसे अत्यंत दुर्लभ एवं भव्य बना देता है। महाकुंभ 2025 का आयोजन प्रयागराज में कुछ इसी भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ था। 1906 में 3 मिलियन जन समूह के प्रयाग में एकत्रित होने की सीमा को काफी पीछे छोड़ते हुये महाकुंभ 2025 में श्रद्धालुओं की संख्या 66 करोड़ से अधिक की सीमा को पार कर गई। इतने विशाल जन समूह के एक स्थान पर धार्मिक अनुष्ठानों में सम्मिलित होने के कारण, प्रयागराज शहर को प्रशासन एवं सरकार ने अनेक सुविधाओं से सुसज्जित किया था ताकि बिना किसी दुर्घटना के महाकुंभ का आयोजन कुशलतापूर्वक सम्पन्न कराया जा सके। सरकार एवं प्रशासन के द्वारा उठाये गये कुछ उचित कदम निम्न है –

- 1) उ० प्र० सरकार ने प्रयागराज के महाकुंभ क्षेत्र को प्रदेश के 76वें अस्थायी जिले के रूप में घोषित किया था। इस जिले का नाम महाकुंभ मेला जनपद या महाकुंभ नगर रखा गया था। सम्पूर्ण जिले को 4 तहसीलों (सदर, सोरांव, फूलपुर, करछना) के साथ 67 गांवों में विभाजित किया गया था।
- 2) सड़को एवं पुलों का नवीनीकरण एवं सौंदर्यीकरण किया गया था।
- 3) श्रद्धालुओं के नेवीगेशन के लिये 800 बहुभाषी साइनबोर्ड लगाए गये थे।
- 4) उच्च तकनीकी स्वास्थ्य सेवाओं के साथ कई अस्पतालों का निर्माण इस क्षेत्र में किया गया था। आयुष मंत्रालय ने राष्ट्रीय आयुष मिशन, उ०प्र० के सहयोग से निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की।
- 5) श्रद्धालुओं की सुरक्षा को देखते हुये। एवं झोनों का समुचित प्रयोग किया गया था। अंडरवाटर झोन, चेक प्वाइंट और खुफिया दस्ते सहित सम्पूर्ण महाकुंभ नगर को सात स्तरीय सुरक्षा प्रणाली प्रदान की गयी थी।
- 6) साइबर खतरों से सुरक्षा प्रदान करने के लिये महाकुंभ साइबर पुलिस स्टेशन की स्थापना तथा 56 समर्पित साइबर योद्धाओं की तैनाती की गयी थी।
- 7) खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये उठाये गये कदमों में नैफेड द्वारा सब्सिडी युक्त राशन वितरण, निःशुल्क भोजन वितरण, रसोई गैस आदि थे।
- 8) स्वच्छता को ध्यान में रखते हुये 10,200 सफाई कर्मचारी और 2800 गंगा सेवादूतों की नियुक्ति की गयी थी। साथही जैव शौचालय स्थापित किये गये थे।

सरकार एवं प्रशासन ने मिलकर महाकुंभ 2025 को सफल बनाने के लिये हर एक उचित बिंदु पर कार्य किया था।

इसी कारण से यह आयोजन कुशलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। महाकुंभ 2025 में भारतीय श्रद्धालुओं के साथ-साथ दक्षिण कोरिया, जापान, स्पेन, रूस, US। तथा अन्य देशों के पर्यटकों ने भी बढ़चढ़ कर भाग लिया था। वैश्विक भागीदारी ने तथा सरकार के विशिष्ट आयोजन ने महाकुंभ 2025 को विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन बना दिया है। जहाँ भारतीय संस्कृति, कला एवं अध्यात्म का प्रदर्शन, कुंभ

ग्राम प्रदर्शनियों, खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी, उ०प्र० दर्शन मंडप, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र मंडप, इलाहाबाद संग्रहालय में भागवत प्रदर्शनी, अविरलशाश्वत कुंभ प्रदर्शनी आदि प्रदर्शनियों के माध्यम से किया गया था।

प्रबंधन चुनौतियाँ—

इतने विशाल जनसमूह के एक स्थान पर एकत्रित होने के कारण प्रबंधन में अनेक चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है। 1954 में स्वतंत्र भारत के प्रथम कुंभ आयोजन में भगदड़ मच जाने के कारण सैकड़ों की संख्या में लोगों की मृत्यु हो गयी थी। इस प्रकार की मानवीय दुर्घटनाओं को दूर करने तथा कुशलतापूर्वक आयोजन संपन्न करने के लिये विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का समझदारी पूर्वक सामना करना अतिआवश्यक है। इतने विशाल आयोजन में आने वाली कुछ चुनौतियाँ निम्न हैं—

- 1) **भीड़ प्रबंधन:**— विशाल जन समूह के समागम में सबसे बड़ी चुनौती भीड़ प्रबंधन की होती है। इसी चुनौती का ठीक से सामना न कर पाने के कारण 1954 के कुंभ आयोजन में इतनी बड़ी दुर्घटना देखने को मिली थी।

शाही स्नान वाले दिनों में अपार जन समूह संगम पर डुबकी लगाने के लिये एक साथ संगम पर पहुंचता है। ऐसी स्थिति में यदि श्रद्धालुओं के आवागमन की उचित व्यवस्था नहीं होती तो भीड़ अनियंत्रित हो जाती है। और यह एक भयानक दुर्घटना का रूप ले लेती है। भीड़ को नियंत्रित करने के लिये भीड़ का प्रबंधन अति आवश्यक होता है। इसके लिये नदी तक जाने एवं वापस आने के लिये अलग-थलग कई मार्गों का निर्माण अनिवार्य होता है। पुरानी सड़कों एवं पुलों का नवीकरण एवं नये मार्गों का निर्माण किया जाना आवश्यक है। इसके साथ ही जगह-जगह पर जन सूचना केंद्रों का निर्माण किया जाना चाहिये तथा नेवीगेशन की उचित व्यवस्था करनी चाहिये।

- 2) **सुरक्षा एवं निगरानी:**— इतने बड़े आयोजन में लोगों की सुरक्षा भी एक बड़ी चुनौती बनकर सामने आती है। भारत जैसे देश जहाँ आतंकवाद ने कई निर्दोषों की जान ली है, ऐसे आयोजनों में इसका खतरा काफी बढ़ जाता है। विशाल जनसमूह को इन खतरों से बचाने के लिये पुलिस, CCTV कैमरा, ड्रोन, AI का समुचित प्रयोग किया जाना चाहिये। कैमरे और ड्रोन के माध्यम से आयोजन में घटित होने वाली छोटी-छोटी घटनाओं पर नजर रखी जा सकती है। वर्तमान समय में साइबर खतरा भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है, जोकैमरा, ड्रोन, AI के संचालन को बुरी तरह से बाधित कर सकता है। इसलिए आधुनिक समय में साइबर सुरक्षा की चुनौतियों का निवारण करना अति आवश्यक हो गया है।

- 3) **स्वच्छता:**— स्वच्छता भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है, वो भी ऐसे स्थल पर जहाँ करोड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं का एकत्रीकरण हो। महाकुंभ जैसे विशाल आयोजन में अपशिष्ट प्रबंधन एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। कचरे को उठाना, एक उचित स्थान पर ले जाना और उसका उचित प्रबंधन करना आयोजन की सफलता के लिये अति आवश्यक है। इसके साथ ही स्वच्छ पानी की व्यवस्था, शौचालय की व्यवस्था भी एक महत्वपूर्ण कार्य है। स्वच्छता को ध्यान में रखते हुये भारी संख्या में सफाई कर्मचारियों की नियुक्ति इस प्रकार के आयोजनों में अति आवश्यक होती है।

- 4) **जनस्वास्थ्य:**— विशाल जन समूह के मध्य संक्रामक रोगों के प्रसार का खतरा सर्वाधिक बना रहता है। इसके साथ ही कुछ दैवीय या मानवीय घटनाएँ भी लोगों के स्वास्थ्य को खतरे में डाल सकती है। इसलिये आयोजन के कुशलतापूर्वक समापन के लिये जन स्वास्थ्य चुनौतियों का प्रबंधन भी अति आवश्यक है। इसके लिये क्षेत्र में अस्पतालों की उचित व्यवस्था करनी चाहिये। जिनमें मामूली उपचार से लेकर बड़ी सर्जरी तक की सभी चिकित्सकीय सुविधाएँ उपलब्ध हो।
- 5) **पर्यावरणीय प्रभाव:**— अत्यधिक संख्या में श्रद्धालुओं के भाग लेने से पर्यावरण पर गंभीर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। लाखों लोगों के स्नान, अपशिष्ट, फूल-प्रसाद के विसर्जन से नदियों का पानी सर्वाधिक दूषित हो जाता है। अपशिष्ट प्रबंधन ठीक से न होने पर यह भी नदियों में मिल जाता है। इन्हीं सभी कारणों से कुंभ जैसे आयोजन में सर्वाधिक प्रदूषण, जल प्रदूषण के रूप में ही होता है। इसके साथ ही वाहनों से निकलता धुआँ, बायो- मास के जलने से वायु प्रदूषण भी बढ़ जाता है। पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिये सबसे ज्यादा श्रद्धालुओं में जागरूकता की आवश्यकता है। इसके साथ ही लगातार नदियों की सफाई भी होनी चाहिये। जहाँ तक हो सके नवीकरणीय ऊर्जा का प्रयोग किया जाना चाहिये। प्लास्टिक, अपशिष्ट को कम करने के लिये सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाना चाहिये।

महाकुंभ 2025 में इन सभी चुनौतियों कि ओर विशेष रूप से ध्यान दिया गया है। इतने बड़े आयोजन के प्रबंधन में चुनौतियाँ तो बनी ही रहती हैं, परंतु इन चुनौतियों का डटकर सामना करना ही आयोजन की पूर्णतः को बनाये रखता है। महाकुंभ 2025 का सफलतापूर्वक समापन भारत की संगठन क्षमता एवं प्रबंधन की विश्वस्तरीय मिसाल है।

निष्कर्ष :—

सनातन संस्कृति में कुंभ पर्व का आयोजन कब से शुरू हुआ इसकी सही जानकारी का अभाव है। परंतु प्राचीन काल से ही प्रयाग क्षेत्र एवं गंगा का सनातनी संस्कृति में विशेष महत्व रहा है। प्रयाग क्षेत्र में संगम के तट पर चलने वाला धार्मिक अनुष्ठान कब विशाल कुंभ मेले के रूप में परिणति हो गया इसके विषय में भी कुछ ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता है। कुंभ मेले से संबंधित समुद्र मंथन की कथा, अमृत बूंदों के भूमि पर गिरने से समाप्त होती है। परंतु समुद्र मंथन की कथा में सीधे तौर पर कहीं भी कुंभ के आयोजन का वर्णन नहीं है। हर्षवर्धन की महामोक्ष परिषद् को हम कुंभ मेले के आयोजन से जोड़ते हुए उसे ही प्राचीनतम लिखित प्रमाण मानते हैं। यह मोक्ष परिषद् भले ही कुंभ न हो परंतु यहाँ यह तो प्रमाणित होता ही है कि हर्षवर्धन के काल में प्रयाग क्षेत्र के संगम का एक विशेष महत्व था। जहाँ हर्ष हर 5 वर्ष के अंतराल पर धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन करता था। जहाँ देश – विदेश के कई राजा सम्मिलित होते थे। इस प्रकार प्राचीन काल से ही प्रयाग क्षेत्र का यह आयोजन वैश्विक रूप धारण किये हुये था। मध्यकालीन भारत में अबुल फजल एवं गोस्वामी तुलसीदास के उल्लेखों से यह निश्चित ही प्रमाणित होता है कि संगम के तट पर आयोजित यह धार्मिक अनुष्ठान लगातार निर्बाध रूप से आयोजित होता आया था। ब्रिटिश काल में भी कुंभ मेले का आयोजन होता रहा जो स्वतंत्र भारत में सनातन संस्कृति के बृहत्तम सम्मेलन का रूप धारण कर चुका है। समय के

साथ ही कुंभ की महत्ता लगातार बढ़ती चली जा रही है। विशाल जन समूह, श्रद्धालुओं के रूप में प्रयाग क्षेत्र में एकत्रित होते हैं और आस्था, भक्ति एवं अध्यात्म में डुबकी लगाते हैं। कुछ तपस्वियों, साधकों एवं भक्तों के मध्य कोई भेदभाव नहीं करता है। प्रत्येक जाति, वर्ण, लिंग के लोग समान रूप से आयोजन में प्रतिभाग करते हैं, जो सनातन संस्कृति के "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा को परिलक्षित करता है। महाकुंभ 2025 प्रयागराज में 13 जनवरी से 26 फरवरी तक आयोजित विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन था, जो 144 वर्षों बाद होता है। यह कुंभ मेला का महाकुंभ रूप था, जिसमें 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने त्रिवेणी संगम में पवित्र स्नान किया, जो इतिहास का सबसे बड़ा जनसमागम साबित हुआ (पिछले रिकॉर्ड से कहीं अधिक)। उत्तर प्रदेश सरकार ने इसे सफल बनाने के लिए व्यापक व्यवस्थाएं कीं—महाकुंभ क्षेत्र को अस्थायी जिला घोषित किया,

सड़क-पुलों का नवीनीकरण, 800 बहुभाषी साइन बोर्ड, अत्याधुनिक अस्पताल, AI-ड्रोन आधारित सात स्तरीय सुरक्षा, साइबर पुलिस स्टेशन, स्वच्छता के लिए 10,200 सफाईकर्मी और जैव शौचालय, तथा खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की। साथ ही सांस्कृतिक प्रदर्शनियां जैसे कुंभ ग्राम, खादी प्रदर्शनी आदि से भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रदर्शन हुआ, जिसमें विदेशी पर्यटक भी शामिल हुए। हालांकि भीड़ प्रबंधन, सुरक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य और पर्यावरणीय प्रभाव जैसी चुनौतियां रहीं, लेकिन कुशल प्रशासन से इन्हें सफलतापूर्वक संभाला गया। महाकुंभ 2025 भारत की संगठन क्षमता की विश्वस्तरीय मिसाल बना।

संदर्भग्रन्थ सूची:-

1. गौड़, वेणीरामशर्मा (1948), कुंभपर्वमाहात्म्य, कृष्णगोपाल केडिया वणिग प्रेस, साक्षी विनायक, बनारस
2. परिहार, अभिषेक सिंह (जनवरी-मार्च 2022), कुंभ का इतिहास और उसकी महत्ता का अध्ययन, इंटरनेशनल जनरलफॉर रिसर्च पब्लिकेशन एंड सेमिनार, संस्करण 13
3. रामानंद, कुंभमेला (मिथक एवं यथार्थ), पि लरिम्स प्रकाशन, वाराणसी
4. गुप्त, डॉ. योगेशकुमार (अप्रैल-जून 2021),
5. जनमाध्यम के रूप में कुंभ के लक्ष्य, समसामयिक सृजन, हंसप्रकाशन, दिल्ली
5. बाजपेई, डॉ. अविनाश (जनवरी-मार्च 2016), कुंभ: भारतीय संस्कृति का अपूर्वदृष्टांत
6. Jarrett, H-S-(1949), AIN & I & AKBARY (english translation), Royal Asiatic society of Bengal, Calcutta, page no- 169
7. Nevill, H-R- (1911), ALLAHABAD: A GAZETTEER, Government press, united provinces, page no- 69
8. महाकुंभ 2025: आस्था, एकता और परंपरा का समागम (26 फरवरी, 2025), प्रेसइन्फोर्मेशन ब्यूरो, दिल्ली
9. श्रीमद् भागवत महापुराण, गीताप्रेस, गोरखपुर
10. श्रीरामचरित मानस, गीताप्रेस, गोरखपुर
11. श्रीमद् वाल्मीकी रामायण, गीताप्रेस, गोरखपुर